अध्याय- पंचम

सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय पंचम

सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 सारांश–

भारत एक विशाल देश है इस विशलता के कारण इस देश में हिन्दू, मुस्लिम, जैन ईसाई, पारसी तथा सिक्ख आदि विभिन्न सम्प्रदायों जातियों एवं धर्मो के लोग रहते है। देश के सभी निवासियों की भाषांए, रीतिरिवाज तथा परम्परांए अलग–अलग हैं। अकेले हिन्दू धर्म को ही ले लीजिए। यह धर्म भारत का सबसे पुराना धर्म है जो वैदिक धर्म, सनातन धर्म, पौराणिक धर्म, तथा ब्रह्म समाज आदि विभिन्न मतो, सम्प्रदायों तथा जातियों में बटा हुआ हैं लगभग यही हाल दूसरे धर्मो का भी है। कहने का तात्पर्य यह है कि भारत में विभिन्न धर्मो, सम्प्रदायों जातियों तथा प्रजातियों भाषाओं के कारण आश्चर्यजनक विलक्षणता तथा विभिन्नता पाई जाती है।

धर्म मानवीय एवं नैतिक मूल्यों को प्रतिष्ठित करता हैं। इसलिए धर्म विहीन शिक्षा के कारण अधर्म, चरित्रहीनता, भ्रष्टाचार आदि अनैतिक कार्यो में वृद्धि हो रही हैं। समाज दुर्बल हो रहा है और देश के नवयुवक बिना किसी मूल्य एवं आदर्श के पाठ पढ़ रहे है। अतः धर्म विहीन शिक्षा नीति के विरोध स्वरूप भारतीय विचारकों एवं शिक्षाविदों ने शिक्षा में धर्म एवं नैतिकता को फिर से महत्वपूर्ण स्थान दिलाने का प्रयास प्रारंभ कर दिया।

देश की एकता और अखण्डता बनाए रखने के लिए एवं लोकतांत्रिक वातावरण बनाये रखने के लिए भारत जैसे बहुधर्मी देश में धर्मनिरपेक्षता का विशेष महत्व हैं। राष्ट्रीय प्रगति एवं सामाजिक विकास के संदर्भ में भी धर्मनिरपेक्षता महत्वपूर्ण है। विभिन्न धर्मो

के अनुयायियों को समान अवसर एवं अधिकार प्रदान करते हुए एक सूत्र में बांधकर विकास के पथ पर अग्रसर होना धर्मनिरपेक्षता की नीति के माध्यम से ही संभव है।

मनुष्य का चरित्र ही उसके जीवन में उत्थान और पतन, सफलता और असफलता का सूचक हैं। अतः यदि हम बालक को सफल व्यक्ति, उत्तम नागरिक बनाना चाहते है तो उसके अन्दर प्रेम, त्याग, सहनशीलता, आत्मविश्वास, एवं उत्साह, अनुशासन, मानसिक, शांति एवं संतोष उत्पन्न करना होगा। तभी उसके अच्छे चरित्र का निर्माण किया जा सकता है। बालकों मे आत्मविश्वास एवं उत्साह नैतिक मूल्यों के कारण उत्पन्न होता है। यह तभी संभव है जब उसके लिए धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा की व्यवस्था की जायें।

चूँकि मूल्यों एवं विचारों का संरक्षण व हस्ताक्षरण शिक्षा का एक महत्वपूर्ण कार्य है, अतः धर्मनिरपेक्षता के मूल्य को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तान्तरण करने के लिए शिक्षा, माध्यम का होना अति आवश्यक है।

शिक्षा ही वही माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति में समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप गुणों के विकास का प्रयास किया जा सकता हैं। शिक्षा द्वारा व्यक्ति में जिन गुणों के विकास की अपेक्षा की जा रही है, यदि उन गुणों के प्रति शिक्षक का दृष्टिकोण सकारात्मक होता है, तो निःसन्हेह लक्ष्य की प्राप्ति की संभावना बढ़ जाती है। क्योंकि शिक्षक शिक्षा व्यवस्था का केन्द्र बिन्दु होता है। किसी भी प्रकार की शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक की महती भूमिका को अस्वीकार नहीं किया जा सकता हैं।

अतः आज महती आवश्यकता है कि अध्यापक को अपने अध्यापन के दौरान सारे बच्चों को अपने बच्चों की तरह मार्गदर्शन

प्राप्त कराने में योगदान देना होगा तभी इतने बड़े विशाल देश को धर्मनिरपेक्ष रखा जा सकता है।

प्रस्तुत शोध का शीषक्र निम्नानुसार है।

"अल्पसंख्यक समुदायों द्वारा संचालित विद्यालयों के शिक्षकों में धर्मनिरपेक्षता की प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।"

शोध की परिकल्पनाएं–

- जैन, ईसाई व मुस्लिम समुदायों द्वारा संचालित विद्यालयों के शिक्षकों में धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है।
- जैन और ईसाई समुदायों द्वारा संचालित विद्यालयों के शिक्षकों में धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है।
- जैन और मुस्लिम समुदायों द्वारा संचालित विद्यालयों के शिक्षकों में धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।
- ईसाई और मुस्लिम समुदायों द्वारा संचालित विद्यालयों के शिक्षकों में धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- अल्पसंख्यक समुदायों द्वारा संचालित विद्यालयों के शिक्षकों में लिंग के आधार पर धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

न्यादर्श का चयन–

न्यादर्श के चयन हेतु म.प्र. के भिण्ड जिले में जैन, ईसाई, व मुस्लिम समुदायों द्वारा संचालित विद्यालयों में से प्रत्येंक समुदाय से तीन–तीन विद्यालयों का चयन लाटरी पद्धति तथा प्रत्येंक समुदाय से 25–25 शिक्षकों का चयन सविचार निदर्शन विधि द्वारा किया गया। इस प्रकार न्यादर्श के रूप में कुल 75 शिक्षकों को चयनित किया गया।

5.2 शोध के निष्कर्ष–

प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष निम्नलिखित है–

- जैन समुदाय के शिक्षकों की अभिवृत्ति औसत धर्मनिरपेक्ष पाई गई।
- ईसाई समुदाय के शिक्षकों में धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति औसत पाई गई।
- मुस्लिम समुदाय के शिक्षकों की अभिवृत्ति औसत धर्मनिरपेक्ष पाई गई।
- अल्पसंख्यक समुदायों के पुरूष व महिला शिक्षकों में भी धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति औसत पाई गई।
- जैन व ईसाई समुदायों के शिक्षकों की अभिवृत्ति समान धर्मनिरपेक्ष नहीं पाई गई।
- जैन व मुस्लिम समुदायों के शिक्षकों की अभिवृत्ति समान धर्मनिरपेक्ष नहीं पाई गई।
- ईसाई व मुस्लिम समुदायों के शिक्षकों की अभिवृत्ति समान धर्मनिरपेक्ष पाई गई।
- अल्पसंख्यक समुदायों के शिक्षकों में लिंग के आधार पर धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति समान नहीं है।

5.3 सुझाव–

राष्ट्र निर्माण हेतु वांछित मूल्यों में से धर्मनिरपेक्षता भी एक हैं। अतः ऐसा प्रयास किया जाना वांछित है, जिससे शिक्षकों में धर्मनिरपेक्षता के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति के विकास का मार्गदर्शन प्रशस्त हो सकें। एतद् कुछ सुझाव प्रस्तुत हैं–

- संवैधानिक व्यवस्थाओं के अतिरिक्त अप्रत्यक्ष या प्रत्यक्ष रूप में किसी विद्यार्थी या शिक्षक को धर्म, जाति या लिंग के आधार पर लाभ न पहुँचाया जाये।
- शिक्षण–प्रशिक्षण संस्थाओं में किसी धर्म विशेष से संबंधित उत्सवों, अनुष्ठानों तथा यज्ञों इत्यादि का न तो आयोजन किया जाये, न ही किसी सामाजिक संस्था के परिसर में ऐसे आयोजनों की अनुमति ही प्रदान की जायें।
- शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में ऐसी पाठ्य सहगामी क्रिया कलापों का आयोजन किया जाये, जिससे प्रशिक्षणार्थियों में धर्मनिरपेक्षता की भावना सुदृढ़ हो।
- सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत नाटक, लोकगीत, निबंध, वाद–विवाद प्रतियोगिता आदि के विषय धर्मनिरपेक्ष विषय की परिधि में ही हों।
- विद्यालयों में सभी धर्मो के महापुरूषों की जयंती मनाई जाये जिससे सर्वधर्म सम्भाव की भावना को बढ़ावा मिल सकें।
- सेवाकालीन अध्यापकों में धर्मनिरपेक्षता के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति के और अधिक विकास हेतु संगोष्ठी इत्यादि का आयोजन किया जाये। इन संगोष्ठयों द्वारा धर्मनिरपेक्षता के महत्व से अवगत कराने के साथ–साथ इन्हें उन उपयोग से भी परिचित कराया जाये जिसके प्रयोग द्वारा वे विद्यार्थियों में इस मूल्य के विकास में समर्थ हो सकेंगें।